



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 9

www.csir.res.in

सितम्बर 2023

डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-केन्द्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमईआरआई), दुर्गापुर द्वारा विकसित पहला स्वदेशी ई-ट्रैक्टर सीएसआईआर प्राइमा ईटी 11 लॉन्च किया

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने केंद्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान-(सीएमईआरआई), दुर्गापुर द्वारा विकसित पहला स्वदेशी ई-ट्रैक्टर सीएसआईआर प्राइमा ईटी 11 लॉन्च करते हुए कहा कि आज भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि स्टार्टअप्स की महत्वपूर्ण भूमिका है।

उन्होंने कृषि में नई तथा आर्टिफिशियल



इंटेलिजेंस आधारित प्रौद्योगिकियों को अपनाने का आह्वान किया।

मंत्री महोदय ने कहा कि ई-ट्रैक्टर,

कचरे की रीसाइक्लिंग, ड्रिप सिंचाई, आम और कमल जैसी जीनोम अनुक्रमित खेती सहित विशिष्ट प्रौद्योगिकियों पर फोकस

करते हुए कृषि क्षेत्र में बड़ी संख्या में नए स्टार्टअप प्रवेश कर रहे हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, “यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत ने अपेक्षित गति नहीं पकड़ी है।” डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, “यह एक विशाल अज्ञात संसाधन है, जो केवल भारत के लिए विशिष्ट है। जो देश आईटी को बढ़ावा दे रहे थे वे अपने दृष्टिकोण से बढ़ावा दे रहे हैं क्योंकि उनके पास संपत्ति है। उनके पास वह कृषि संपत्ति नहीं है जो हमारे पास है। इसलिए हमें उनकी नकल करने की आवश्यकता नहीं है। अगर मेरे पास भरपूर कृषि संसाधन हैं तो मैं इसका उपयोग क्यों न करूं...इसलिए यह मार्ग अगले 25 वर्षों में भारत की भविष्य की अर्थव्यवस्था में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक होगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने सरकार द्वारा संचालित वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में आयोजित अनुसंधान एवं विकास की सफलता के लिए 5 एस-शोकेसिंग, स्टेकहोल्डर, स्टार्टअप, सिनर्जिंग और स्ट्रेटेजाइजिंग इंडस्ट्री लिंकेज (प्रदर्शन, हितधारक, स्टार्टअप, सिनर्जिंग और उद्योग लिंकेज की रणनीति) का मंत्र दिया।

उन्होंने कहा, “जब तक हम इन सभी पांच घटकों को शामिल करने में सक्षम नहीं होंगे, हम अधिकतम परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं होंगे।”

डॉ. जितेंद्र सिंह ने एकीकृत दृष्टिकोण का आह्वान करते हुए संबंधित मंत्रालयों सहित सभी हितधारकों के साथ इंटरैक्शन की बात की।

इसमें सीएसआईआर प्रयोगशालाओं और उद्योग के बीच व्यापक संबंध शामिल हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए एक अलग प्रकोष्ठ बनाने का प्रस्ताव किया।

उन्होंने कहा, “स्वयं को बनाए रखने



के लिए आपको पहले दिन से ही उद्योग जगत की भागीदारी रखनी होगी।” उन्होंने कहा, “हमारे पास उद्योग हैं जो निवेश करने के लिए तैयार हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि कहां और कैसे निवेश करना है।”

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने पिछले नौ वर्षों में कृषि क्षेत्र में व्यापार को आसान बनाकर आजीविका के नए साधन सृजित किए हैं।

उन्होंने कहा, “हमारे पास एक बहुत ही अनुकूल वातावरण और एक सक्षम नेतृत्व है, जो काफी संरक्षण दे रहा है,” उन्होंने कहा, “पीएम मोदी ने न केवल हमें अपनी पूरी क्षमता और योग्यता के साथ प्रदर्शन करने की स्वतंत्रता दी है, बल्कि उन्होंने विज्ञान और वैज्ञानिकों का सम्मान भी बढ़ाया है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बल देकर कहा है कि अमृत काल में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण

भूमिका होगी क्योंकि भारत का लक्ष्य एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभरना है।

उन्होंने कहा, “अगले 25 वर्षों में, सरकारी नौकरियों के बाहर आजीविका के अवसरों पर बल

दिया जा रहा है, यह कृषि क्षेत्र न केवल अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनने जा रहा है, बल्कि यह युवाओं के लिए व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी बनने जा रहा है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस अवसर पर सीएसआईआर-सीमेप की पुस्तक और सीएसआईआर द्वारा विकसित 75 प्रौद्योगिकियों पर एक सार-संग्रह का विमोचन किया।

मंत्री महोदय ने सीएमआईआरआई द्वारा विकसित रिसाइक्लिंग वाहनों और उत्पादों में गहरी रुचि दिखाई।

सीएसआईआर-सीएमआईआरआई में 11 से 15 सितंबर 2023 तक विषय-आधारित अभियान “वन वीक वन लैब” मनाया गया, जिसमें विभिन्न हितधारकों को प्रयोगशाला के अत्याधुनिक अनुसंधान, उत्पाद और प्रौद्योगिकी, विशेषज्ञता और सुविधाएं दिखाई गयीं।

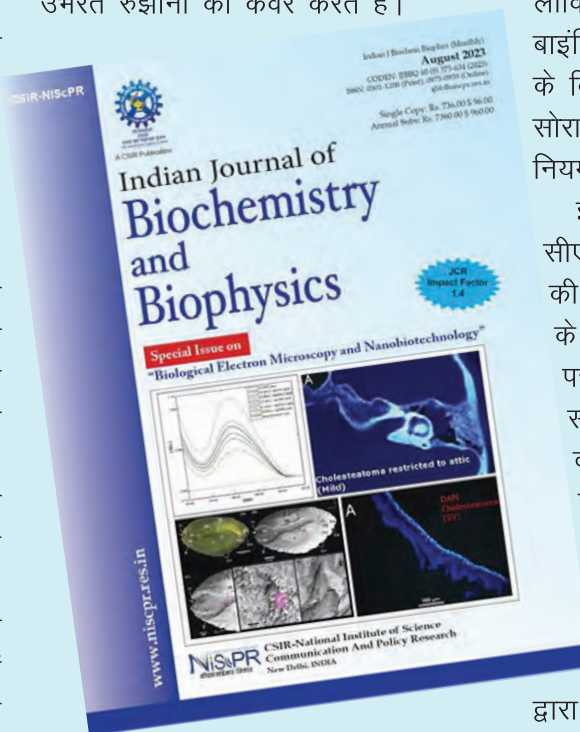
सीएसआईआर-निस्पर ने जैविक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी और नैनोबायोटेक्नोलॉजी पर इंडियन जर्नल ऑफ बायोकेमिस्ट्री एंड बायोफिजिक्स का विशेष अंक प्रकाशित किया

भारत सरकार की पहल "आजादी का अमृत महोत्सव" और जी20 के भाग के रूप में इंडियन जर्नल ऑफ बायोकेमिस्ट्री एंड बायोफिजिक्स (आईजेबीबी), सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली ने एनाटॉमी विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के साथ मिलकर भारतीय संदर्भ में "जैविक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी और नैनोबायोटेक्नोलॉजी" विषय पर एक विशेष अंक प्रकाशित किया है।

भारत में एक अग्रणी सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित विज्ञान प्रकाशन संस्थान के रूप में, सीएसआईआर-निस्पर विभिन्न एसटीआई विषयों में 16 जर्नल प्रकाशित करता है और उन सभी को साइंस साइटेशन इंडेक्स (वेब ऑफ साइंस), स्कोपस, एनएएस और यूजीसी केयर जैसी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा अनुक्रमित किया जाता है।

बायोकेमिस्ट्री, बायोफिजिक्स और बायोटेक्नोलॉजी के विषय क्षेत्र में आईजेबीबी एक प्रमुख मासिक पीयर-रिव्यूड शोध पत्रिका है, जो 1.4 के जेआईएफ स्कोर के साथ सभी विषयों में प्रकाशित सीएसआईआर-निस्पर पत्रिकाओं में पहले स्थान पर है। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ हाल ही में पुनर्गठित संपादकीय बोर्ड के सक्षम मार्गदर्शन और सक्रिय समर्थन से पत्रिका दुनिया भर के शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों का

अच्छा-खासा ध्यान आकर्षित कर रही है। इस विशेष अंक (अगस्त 2023 आईजेबीबी वॉल्यूम 60 अंक संख्या 8) में 6 मूल शोध पत्र हैं जो विषय क्षेत्र में प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं द्वारा योगदान किए गए जैविक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी और नैनोबायोटेक्नोलॉजी में उभरते रुझानों को कवर करते हैं।



लेख में शामिल हैं (I) सिल्वर नैनोकणों का फेदर प्रोटीन हाइड्रोलाइजेट की मध्यस्थता से संश्लेषण तथा सिल्वर नैनोकण-उपचारित रेशमी कपड़े की रोगाणुरोधी क्षमता का आकलन (II) गंभीर कोविड-19 वाले टाइप II न्यूमोसाइट्स अप्लास्टिक एनीमिया रोगियों में फेफड़ों के पर असामान्य अल्ट्रास्ट्रक्चर विशेषताएं (III) नेफ्रोटाक्सिसिटी के शुरुआती लक्षणों

वाले प्लोरोसिस रोगियों में मूत्र संबंधी एक्सोसोम अलगवाव (IV) एनाबैटिफोर्मिस मछलियों में सैगिरे की अल्ट्रास्ट्रक्चरल विविधताएं (V) एंड्रोग्राफिस पैनिकुलता जलीय अर्क के साथ संयुग्मित जैव संश्लेषित जिंक ऑक्साइड नैनोकणों की इन विट्रो लार्विसाइडल, एंटीऑक्सिडेंट और डीएनए बाइंडिंग गतिविधि और (VI) सूजन, हड्डी के विनाश और रोग की गंभीरता से जुड़े सोरायसिनिन कोलेस्टीटोमा का उच्च नियमन।

इस विशेष अंक का प्रकाशन सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल के सहयोग और क्षेत्र के विश्व स्तर पर प्रसिद्ध विशेषज्ञों वाले नवगठित संपादकीय बोर्ड के सक्षम मार्गदर्शन में हुआ है। इसमें प्रोफेसर स्टीफन दिमित्रोव (मुख्य संपादक, आईजेबीबी) और डॉ. डी एन राव (कार्यकारी संपादक, आईजेबीबी) शामिल हैं। साथ ही, डॉ. एन के प्रसन्ना, वैज्ञानिक संपादक, आईजेबीबी द्वारा की गई पहल और श्री आरएस जयसोमू, डॉ. जी महेश, डॉ. मेहर वान (प्रमुख, शोध पत्रिकाएँ) से आवश्यक प्रोत्साहन मिलने की वजह से यह संभव हो पाया।

इस अंक के सफल समयानुकूल प्रकाशन के लिए लेखकों, समीक्षकों के योगदान और सीएसआईआर-निस्पर की प्रिंट प्रोडक्शन टीम द्वारा प्रदान किया गया तकनीकी समर्थन विशेष उल्लेख के योग्य हैं।

एनआईटी, जमशेदपुर और सीजीसीआरआई, कोलकाता ने अनुसंधान और नवाचार के लिए हाथ मिलाया

नवाचार और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने के लिए जमशेदपुर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) और कोलकाता में केन्द्रीय कांच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान (सीजीसीआरआई) ज्ञान विनिमय कार्यक्रम के तहत एक

साथ आए हैं। संस्थान अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में व्यापक संभावनाओं का पता लगाने के लिए अपनी विशेषज्ञता और संसाधनों को साझा करने के लिए पारस्परिक रूप से सहमत हुए हैं।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के तहत भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित पहली चार प्रयोगशालाओं में से

एक के रूप में जाने जाने वाले सीजीसीआरआई ने ऑप्टिकल ग्लास और सिरामिक के विकास में अपने योगदान के लिए वैश्विक प्रशंसा अर्जित की है। संस्थान की उल्लेखनीय प्रगति ने इसे अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है।

कोलकाता में सीजीसीआरआई मुख्यालय में, एनआईटी-जमशेदपुर के निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) गौतम सूत्रधर और सीजीसीआरआई-कोलकाता की निदेशक डॉ. सुमन कुमारी मिश्रा ने एक महत्वपूर्ण बैठक की, जिसमें

अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग करने की अपनी प्रतिबद्धता को औपचारिक रूप से मजबूत किया गया। साझेदारी का उद्देश्य विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों का पता लगाना है, जिसमें ऑप्टिकल ग्लास का विकास, ग्लास और सिरामिक प्रौद्योगिकी में प्रगति, ग्लास से

समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करेंगे।

सहयोग के हिस्से के रूप में, दोनों संस्थान शोध अध्येताओं और छात्रों को एक-दूसरे के संस्थानों में इंटर्नशिप करने के अवसर प्रदान करेंगे। यह

क्रॉस-लर्निंग दृष्टिकोण एनआईटी-जमशेदपुर और सीजीसीआरआई-कोलकाता दोनों के उपलब्ध संसाधनों और विशेषज्ञता को सहयोग करेगा। इसके अतिरिक्त, एनआईटी-जमशेदपुर के एम.टेक. छात्रों और पीएचडी विद्वानों को सीजीसीआरआई के विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन किया जाएगा, जिससे उनके शोध अनुभव और समृद्ध होंगे।

यह सहयोग एनआईटी-जमशेदपुर और सीजीसीआरआई-कोलकाता के बीच प्रौद्योगिकी, अनुभवों और अनुसंधान से संबंधित जानकारी के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करेगा। संयुक्त परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से, दोनों संस्थानों के छात्र और शोधकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों और प्रगति में विशेषज्ञता हासिल करेंगे।

सीजीसीआरआई ने पहले से ही भारतीय उद्योगों की जरूरतों को पूरा



संबंधित मूल्यांकन में मौलिक अध्ययन, लेजर ग्लास पर शोध, इन्फ्रारेड ट्रांसमिटिंग फिल्टर, सिंथेटिक क्वार्ट्ज सिंगल क्रिस्टल, उच्च तापमान उच्च एल्यूमिना, सिरामिक सील, स्पेसर, और बहुत कुछ शामिल हैं। यह सहयोग सीजीसीआरआई की पहले से ही प्रतिष्ठित स्थिति को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाएगा।

एनआईटी-जमशेदपुर और सीजीसीआरआई-कोलकाता अनुसंधान प्रयासों में अपने सर्म्थन और परस्पर सहयोग को औपचारिक रूप देने के लिए जल्द ही एक संयुक्त

करने के लिए फोम ग्लास, ग्लास-बॉन्ड अभ्रक, इस्पात संयंत्रों के लिए रिफ्रेक्टरीज और विशेष सिरमिक सामग्री जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध किया है।

संस्थान की विश्व स्तरीय मान्यता दूरसंचार, ग्लास फाइबर-आधारित कंपोजिट के उत्पादन और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों तक फैली हुई है। मिट्टी के बर्तनों के उत्पादन के लिए स्थानीय मिट्टी का उपयोग स्थानीय कारीगरों के लिए

परिवर्तनकारी साबित हुआ है।

कोलकाता में हुई बैठक में सीजीसीआरआई के कई वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भाग लिया, जिन्होंने सहयोग के बारे में सकारात्मकता व्यक्त की।

एनआईटी जमशेदपुर के प्रवक्ता, सुनील कुमार भगत ने इस निर्णय के महत्व पर प्रकाश डाला, और जोर देकर कहा कि यह अनुसंधान परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालेगा।

एनआईटी जमशेदपुर और सीजीसीआरआई कोलकाता के बीच सहयोग अनुसंधान के क्षेत्र में ज्ञान के आदान-प्रदान और नवाचार के लिए एक उल्लेखनीय मिसाल कायम करता है।

साझा विशेषज्ञता और संसाधनों के साथ संस्थान, वैज्ञानिक प्रगति में अग्रणी योगदान देने और समाज के सामने आने वाली महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने की आकांक्षा रखते हैं।

सीएसआईआर-एनबीआरआई ने राज्य में 5 हजार पौधों की प्रजातियों को समाहित करने वाली 'ई-फ्लोरा ऑफ यूपी' पुस्तक लॉन्च की

लखनऊ में सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) में "वन वीक वन लैब" पहल के हिस्से के रूप में पौधों की विविधता, सिस्टमैटिक्स और हर्बेरियम पर केंद्रित एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

सीएसआईआर-एनबीआरआई के निदेशक डॉ. ए के शासनी ने कहा कि प्रदर्शनी का विषय सीएसआईआर-एनबीआरआई में प्लांट डायवर्सिटी, सिस्टमैटिक्स और हर्बेरियम डिवीजन के अनुसंधान और प्रकाशन उपलब्धियों को प्रदर्शित करने पर केंद्रित है। इस कार्यक्रम में कई उल्लेखनीय प्रकाशनों का विमोचन हुआ, जिनमें 'उत्तर प्रदेश के संयंत्र संसाधन: एक व्यापक चेकलिस्ट' नामक पुस्तक, 'उत्तर प्रदेश का ई-फ्लोरा' और 'सीएसआईआर-एनबीआरआई हर्बेरियम (एलडब्ल्यूजी)' को प्रदर्शित करने वाला

एक ब्रोशर शामिल है।

'ई-फ्लोरा' और पुस्तक सामूहिक रूप से उत्तर प्रदेश की मूल निवासी 5,000 से अधिक पौधों की प्रजातियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

राज्य के मुख्य सचिव और कार्यक्रम के

पारिस्थितिक क्षरण से निपटने की तात्कालिकता पर जोर दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों के समर्पित अनुसंधान प्रयासों की सराहना की, जिसमें विभिन्न पौधों की प्रजातियों के दस्तावेजीकरण और संरक्षण में वर्गीकरण अध्ययन और हर्बेरियम

की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया, जिनमें से कई विलुप्त होने के खतरे में हैं। उन्होंने हमारे पूर्वजों द्वारा छोड़े गए ज्ञान के भंडार का उपयोग करने के लिए प्राचीन ग्रंथों की गहन खोज का भी आग्रह किया।

सीएसआईआर

-एनबीआरआई के निदेशक डॉ. ए के शासनी ने कहा कि प्रदर्शनी का विषय सीएसआईआर-एनबीआरआई में प्लांट



मुख्य अतिथि दुर्गा शंकर मिश्रा ने वृक्षारोपण में वृद्धि और वनीकरण के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने की वकालत करके

डायवर्सिटी, सिस्टमैटिक्स और हर्बेरियम डिवीजन के अनुसंधान और प्रकाशन उपलब्धियों को प्रदर्शित करने पर केंद्रित है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों में भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक

एम संजय पीवी साने, सीएसआईआर-एनबीआरआई के पूर्व निदेशक और सीएसआईआर-आईएमएमटी, भुवनेश्वर के निदेशक डॉ. रामानुज नारायण सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत सीएसआईआर-एनबीआरआई ने सिकंदरबाग क्रॉसिंग पर सौंदर्यीकरण अभियान शुरू किया। इस प्रयास के तहत सड़क के डिवाइडर के किनारे सजावटी पौधे लगाए गए।

सीएसआईआर-सीरी में क्षेत्रीय विज्ञान कांग्रेस 2023 के समापन कार्यक्रम का आयोजन

क्षेत्रीय विज्ञान कांग्रेस 2023 के समापन एवं विदाई सत्र का आयोजन 15 सितंबर, 2023 को सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में किया गया। दिनांक 11 से 15 सितंबर, 2023 तक आयोजित किए गए पाँच दिवसीय लघु विज्ञान कुंभ की मेजबानी संयुक्त रूप से सीएसआईआर-सीरी और बिट्स पिलानी द्वारा की गई थी। इस विज्ञान कांग्रेस 2023 का उद्घाटन बिट्स-पिलानी में तथा समापन सत्र सीएसआईआर-सीरी में आयोजित किया गया। समापन समारोह में प्रोफेसर एस के बरई, निदेशक, बिट्स-पिलानी मुख्य अतिथि थे। डॉ सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी समारोह के विशिष्ट अतिथि थे।

संस्थान के सभागार में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि प्रोफेसर एस के बरई ने अपने संबोधन में प्रतिभागी विद्यार्थियों के उत्साह एवं सक्रियता की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने अपने संबोधन में छात्रों को गुरुमंत्र देते हुए कहा कि 'समर्पण, लगन और अनुशासन' जीवन में सफलता का आधार है। अपने संक्षिप्त संबोधन में उन्होंने अनुभव साझा करते



हुए उन्हें अपना लक्ष्य निर्धारित करने और उसे प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। अंत में उन्होंने सभी प्रतिभागियों को भविष्य के लिए शुभकामना दी।

विशिष्ट अतिथि डॉ सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक ने प्रतिभागी विद्यार्थियों का आह्वान किया कि उन्होंने जो कुछ भी इस पाँच-दिवसीय कार्यक्रम में दोनों विख्यात संस्थानों में सीखा है उसका एक जिम्मेदार विद्यार्थी के रूप में अपने जीवन में उपयोग करें। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की

सुरक्षा हम सभी का नैतिक दायित्व है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हमारे सभी प्रतिभावान विद्यार्थी जलवायु एवं पर्यावरण के प्रति सजग रह कर अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को संस्थान के विद्यार्थी-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम 'जिज्ञासा' के माध्यम से संस्थान के वैज्ञानिकों से संपर्क करने के लिए आमंत्रित भी किया।

लघु विज्ञान-कुंभ रूपी इस क्षेत्रीय विज्ञान कांग्रेस 2023 में नवोदय विद्यालय समिति, जयपुर संभाग के 57 जवाहर



नवोदय विद्यालयों के 112 मेधावी छात्र-छात्राओं ने अपने शिक्षकों के साथ सक्रिय प्रतिभागिता की। इस दौरान उन्हें क्लाइमेट क्लॉक की असेम्बली का प्रशिक्षण दिया गया। समापन सत्र से पूर्व विद्यार्थियों ने इसरो के चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग से प्रेरित हो कर संस्थान के वैज्ञानिकों, शोधार्थियों एवं अन्य सहकर्मियों के मार्गदर्शन में हाइड्रो-रॉकेट भी तैयार किए। कार्यक्रम के दौरान उनके प्रक्षेपण का प्रदर्शन भी किया गया।

सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 13 व 15 सितंबर 2023 के दौरान क्षेत्रीय विज्ञान कांग्रेस के अंतर्गत आयोजित 'जलवायु घड़ी-असेम्बली एवं डिस्प्ले ईवेन्ट' सहित तकनीकी सत्रों तथा समापन एवं विदाई समारोह का समन्वयन एवं संचालन श्री प्रमोद तंवर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख, पीएमई ने किया। उन्होंने आमंत्रित अतिथियों और विद्यार्थियों का औपचारिक स्वागत किया। अतिथियों द्वारा कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी के लिए छात्रों को

ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। अपने फीडबैक में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने बच्चों व शिक्षकों ने आयोजन की संकल्पना के साथ-साथ भव्य तरीके से इस आयोजन को मूर्त रूप देने के लिए सीरी एवं बिट्स के निदेशकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री संजय कुमार यादव, प्रधानाचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, काजड़ा क्षेत्रीय विज्ञान कांग्रेस 2023 के मुख्य समन्वयक थे। उन्होंने इस आयोजन की संयुक्त मेजवानी और सभी प्रकार के सहयोग के लिए बिट्स व सीरी के निदेशक प्रोफेसर एस के बरई और डॉ पी सी पंचारिया के प्रति आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व विज्ञान कांग्रेस 2023 के विभिन्न तकनीकी सत्रों में संस्थान के

वैज्ञानिकों ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को अपने कार्यक्षेत्र से परिचित कराते हुए व्याख्यान दिए।

विद्यार्थियों को पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बौद्धिक संपदा (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी) जैसे महत्वपूर्ण विषय के विभिन्न पहलुओं से भी परिचित कराया गया। अंत में नवोदय विद्यालय के शिक्षक श्री नरेन्द्र सिंह ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट ने सीएसआईआर-आईआईपी के निदेशक का पदभार संभाला

डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट ने सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान के निदेशक का पदभार ग्रहण किया।

उन्होंने प्रोफेसर रामचरला प्रदीप कुमार का स्थान लिया, जिन्होंने 1 मई, 2023 से निदेशक के रूप में अतिरिक्त प्रभार संभाला था। 12 अक्टूबर, 1971 को जन्मे डॉ. हरेंद्र सिंह बिष्ट ने सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में काम करते हुए 2003 में एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय से पॉलिमर विज्ञान में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद, वह तापमान और पीएच-उत्तरदायी स्मार्ट पॉलिमर पर अपने पहले पोस्टडॉक्टरल शोध के लिए वेन स्टेट यूनिवर्सिटी, डेट्रॉइट, मिशिगन, यूएसए चले गए। इन पॉलिमर का उपयोग लक्षित जीन वितरण के वैक्टर के रूप में किया जाता है।

डॉ. बिष्ट को वर्ष 2006-07 के दौरान एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा में एक संक्षिप्त शैक्षणिक अनुभव प्राप्त हुआ। उन्होंने डोर्फ कंटल केमिकल्स (आई) प्राइवेट

लिमिटेड में सहायक प्रबंधक, अनुसंधान एवं विकास के रूप में भी काम किया।

वर्ष 2007-08 के दौरान उन्होंने अपना दूसरा पोस्टडॉक्टरल शोध बौर्गोनेन विश्वविद्यालय, डिजॉन फ्रांस में एमआरआई इमेजिंग अनुप्रयोगों के लिए सुपर पैरामैग्नेटिक आयरन ऑक्साइड नैनोकणों के काल्पनिकीकरण पर किया।

अपने व्यावसायिक जीवन के दौरान, डॉ. बिष्ट ने विभिन्न प्रतिष्ठित संगठनों और संस्थाओं में काम किया। सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में अपना कार्यकाल शुरू करने से पहले, वह रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के साथ काम



कर रहे थे और उपाध्यक्ष-रिफाइनिंग आर एंड डी के रूप में रिलायंस, जामनगर में कोकर और एडवांस्ड कार्बन मटेरियल ग्रुप का नेतृत्व कर रहे थे।

डॉ. बिष्ट के शानदार करियर में फीचर-समीक्षित पत्रिकाओं में कई प्रकाशन भी दर्ज हैं। उन्होंने 11 पेटेंट दायर किए हैं और 21 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

सीएसआईआर-बेंगलुरु की राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशाला ने झीलों, जल निकायों को साफ करने के लिए जलदोस्त समाधान का अनावरण किया

जल निकायों, विशेषकर झीलों और नदियों को साफ और जलीय खरपतवारों और कचरे से मुक्त रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अभ्यास को आसान बनाने के लिए, बेंगलुरु स्थित वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय वांतरिक्ष

प्रयोगशालाओं ने जलदोस्त का अनावरण किया है।

जलदोस्त एक एयरबोट है जो खरपतवार हटाने में मदद करती है और एक विमान इंजन द्वारा संचालित होती है।

एनएएल, जो सीएसआईआर की एक

प्रयोगशाला है, ने केंद्र सरकार की “वन वीक, वन लैब” पहल के हिस्से के रूप में जलदोस्त के लॉन्च की घोषणा की। जलदोस्त का निर्माण बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका की खरपतवारों और कचरे को हटाकर जल निकायों को साफ

रखने की आवश्यकताओं के अनुसार किया गया है।

संयोग से, बेंगलुरु में 190 झीलें हैं और यह मशीन उन्हें साफ रखने के काम में मदद करेगी।

एनएल के अनुसार, "जलदोस्त को जल निकायों को बचाने और अत्यधिक जलीय खरपतवार और अन्य तैरते कचरे को हटाने के लिए स्वदेशी तकनीक से विकसित किया गया है। इसे स्वाभा. विक रूप से डूबने योग्य बनाने के लिए इसमें एक बंद वायुरोधी पोंटून है। इसमें एक हाइब्रिड प्रणोदन प्रणाली है जिसमें वायु प्रणोदन और पैडल व्हील प्रणोदन शामिल है।

पैडल व्हील प्रोपल्शन को मोड़ने और

ऑपरेशन को उलटने के लिए उपयोगी है। वायु प्रणोदन तट तक तेजी से यात्रा करने और वापस लौटने के लिए अतिरिक्त बल प्रदान करता है।"



जलदोस्त में "खरपतवारों के बीच से गुजरने की क्षमता है, जो इसे इकट्ठा करने और किनारे तक लाने के लिए एक आदर्श मंच बनाती है।"

इसमें सामने लगा एक स्टील मेश बेल्ट कन्वेयर सिस्टम लगातार कचरे को इकट्ठा करता है।

एकत्रित कचरा क्वैटिज डेक कन्वेयर पर गिरता है, जो इसे बोर्ड पर रखता है। किनारे पर पहुंचने के बाद, एकत्र किए गए कचरे को रियर कन्वेयर सिस्टम द्वारा ट्रकों और/ट्रैक्टरों पर उतार दिया जाता है।

चूंकि जलदोस्त एक विशेष प्रयोजन ट्रॉली-सह-हाइड्रोलिक लॉन्चर है, इसे ट्रैक्टर द्वारा खींचा जा सकता है, जिससे इसे स्थानांतरित करने के लिए आवश्यक मोबाइल क्रेन और ओपन-बेड लॉरी ट्रेलरों को किराए पर लेने की लागत कम हो जाती है। मशीन की तकनीक इन-हाउस विकसित की गई है और इसे श्रीवारी इंजीनियरिंग सिस्टम्स के सहयोग से बनाया गया है।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में आईपीपीटीए कार्यक्रम

पूर्ववर्ती मैसूर शाही परिवार के वंशज यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार को शुक्रवार, 4 अगस्त को मैसूर में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई में इंडियन पल्प एंड पेपर टेक्निकल एसोसिएशन द्वारा आयोजित जोनल सेमिनार के समापन समारोह में सम्मानित किया गया।



मैसूर में सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के सहयोग से इंडियन पल्प एंड पेपर टेक्निकल एसोसिएशन (आईपीपीटीए) द्वारा "खाद्य पैकेजिंग पर जोर देकर एकल-उपयोग प्लास्टिक के स्थान पर कागज का उपयोग करना" विषय पर आयोजित दो दिवसीय जोनल सेमिनार संपन्न हुआ।

पूर्ववर्ती मैसूर शाही परिवार के वंशज यदुवीर कृष्णदत्त

चामराजा वाडियार, जो समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे, ने उस सभा को संबोधित किया जिसमें टेक्नोक्रेट, वैज्ञानिक, कागज उद्योग के प्रतिनिधि और विशेषज्ञ शामिल थे। आईपीपीटीए के अध्यक्ष गणेश भड्डी, महासचिव एम.के. गोयल एवं मुख्य वैज्ञानिक राजेश्वर मैचे उपस्थित थे।

पहले दिन पैनल चर्चा और तकनीकी सत्रों के बाद, सेमिनार के दूसरे दिन दो

तकनीकी सत्र हुए जहां आमंत्रित वक्ताओं ने विषय पर अपने विचार साझा किए।

सत्रों में पैकेजिंग के लिए स्थायी बाधाएँ—अवसर और चुनौतियाँ शामिल थीं :— पैक किए गए चिकन मांस की खराबी/ताजगी की निगरानी के लिए एक वर्णमिति कागज—आधारित समय तापमान संकेतक खाद्य पैकेजिंग आदि में कागज उत्पादों द्वारा एकल-उपयोग प्लास्टिक का प्रतिस्थापन

तनुजा अब्बुरी, डीईआई लीडर अमेज़न, एशिया प्रशांत/भारत/लैटिन अमेरिका, जो एक आमंत्रित वक्ता थीं, ने “कार्यस्थल पर नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए आउट ऑफ द बॉक्स थिंकिंग” विषय पर एक विशेष सत्र को संबोधित किया। समापन सत्र में, सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कारों की घोषणा की गई और गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उन्हें प्रस्तुत किया गया।

एएएमडीसी बेमिना में उद्यमिता विकास पर एक दिवसीय रोड शो आयोजित किया गया



अब्दुल अहद आजाद मेमोरियल डिग्री कॉलेज (एएएमडीसी) बेमिना, क्लस्टर यूनिवर्सिटी श्रीनगर ने टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन्स (आईआईआईएम)

जम्मू के सहयोग से एक दिवसीय “उद्यमिता विकास पर रोड शो” का आयोजन किया।

इस रोड शो का आयोजन छात्रों, विद्वानों, कर्मचारियों, युवा उभरते उद्यमियों और स्टार्टअप को आविष्कारों, नवाचारों,

स्टार्ट-अप और प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से किया गया था।

क्लस्टर यूनिवर्सिटी श्रीनगर के कुलपति प्रो. (डॉ.) कय्यूम हुसैन ने कार्यक्रम की

अध्यक्षता की। कुलपति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर जोर दिया कि कृषि क्षेत्र में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान करने की बड़ी क्षमता है, साथ ही यह समाज के संख्यात्मक रूप से बड़े और कमजोर वर्ग को प्रत्यक्ष रोजगार और राजस्व प्रदान करता है।

उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में उत्पादन और लाभप्रदता में सुधार के लिए कृषि उद्यमिता न केवल एक अवसर है, बल्कि एक आवश्यकता भी है।

सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू के विशेषज्ञ डॉ. सौरभ सरन, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईआईआईएम; इंजीनियर अंकुश वर्मा, समन्वयक/सीईओ, आईआईआईएम-टीबीआई और एस ए बासित, समन्वयक, आईआईआईएम

-आईसी इनक्यूबेटर ने उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बात की और बताया कि कैसे वे वित्तीय योजना विकसित करने में मदद के अलावा बेहतर नौकरी के अवसरों में सहायता करते हैं, जो किसी भी उद्यमी के सफल होने के लिए आवश्यक है।

उन्होंने उन्नत औद्योगिक और तकनीकी कौशल प्राप्त करके प्रौद्योगिकी-आधारित उद्यम को सफलतापूर्वक कैसे शुरू और चलाया जाए, इस पर भी प्रकाश डाला।

इसके अलावा, उद्यमियों, नए स्टार्टअप, शोधकर्ताओं, छात्रों, संस्थानों, वैज्ञानिकों, छोटी या मध्यम कंपनियों को समर्थन देने में आईआईआईएम-टीबीआई की भूमिका के बारे में भी विस्तार से बात की गई, जो अपने विचारों या नवोदित प्रौद्योगिकियों को

व्यावसायिक रूप से सफल उद्यमों में विकसित करने की योजना बना रहे हैं।

कार्यक्रम के दौरान एक प्रश्न उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जहां छात्रों और नवोदित उद्यमियों ने सीएसआईआर-आईआईआईएम जम्मू के विशेषज्ञों की टीम से नवाचारों, स्टार्टअप और उद्यमिता विकास के बारे में अपने संदेहों का स्पष्टीकरण मांगा।

मेजबान कॉलेज के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) नजीर अहमद सिमनानी ने अपने संबोधन में कहा कि युवा उभरते उद्यमियों की नवीन और उद्यमशीलता क्षमता और कौशल को निखारने के लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम आवश्यक हैं, और छात्रों को इसके लिए संबंधित संस्थानों/विभागों से संपर्क करने की सलाह दी।

अंतर्राष्ट्रीय यात्रा प्रदर्शनी ‘वैक्सीन इंजेक्टिंग होप’ का उद्घाटन रमन विज्ञान केंद्र और तारामंडल, नागपुर में किया गया

कोविड-19 महामारी ने वर्ष 2020 में भयानक तीव्रता और तेजी से दुनिया पर हमला किया और भारी जनहानि की।

लेकिन इस तरह के पहले के प्रकोपों के विपरीत, दुनिया इस नई विषाणुजनित बीमारी से तुरंत बचाव के लिए तैयार थी। जहां टीकों को तैयार होने में दशकों लग जाते हैं, इस मामले में, विश्व के वैज्ञानिक, अब तक अज्ञात और अप्रयुक्त आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके, एक प्रभावी टीके के निर्माण होने के एक वर्ष से भी कम समय में इसके कई संस्करण तैयार कर सके। यदि पराजित नहीं हुआ होता तो वायरस प्रबल हो गया होता। एनसीएसएम और यूके के साइंस म्यूजियम ग्रुप द्वारा आयोजित यह प्रदर्शनी



हमें आधुनिक समय की वैक्सीन के निर्माण की कहानी और इसके मानवीय पक्ष के साथ इसके कई पहलुओं के बारे में बताती है।

प्रदर्शनी में 'नए वायरस का आगमन', 'एक नई वैक्सीन डिजाइन करना', 'परीक्षण, परिणाम और अनुमोदन', 'स्केलिंग अप और बड़े पैमाने पर उत्पादन', 'वैक्सीन रोलआउट', 'कोविड के साथ रहना' पर सम्मिलित हैं और इनकी कहानी बताई गई है। महामारी की गति से टीके विकसित करने के नए तरीके खोजने और टीकाकरण को ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण से अधिक व्यापक रूप से देखने का वैश्विक प्रयास किया गया।

प्रदर्शनी ने वैक्सीन के निर्माण और प्रभावकारिता के अंतर्निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों को स्थापित किया, जबकि उनके तेजी से विकास, उत्पादन, परिवहन और वितरण के साथ-साथ पर्दे के पीछे के काम को भी दर्शाया गया।

प्रदर्शनी 'थ्रू दी लेंस' को प्रदर्शित करती है, जो कि ब्रिटिश काउंसिल द्वारा कमीशन की गई एक कलाकृति है और दिल्ली स्थित भारतीय मूर्तिकार, सुशांक कुमार और लंदन के नाटककार, निगेल टाउनसेंड के बीच सहयोग से बनाई गई है। कलाकृति ऐतिहासिक रूप से और हाल ही में कोविड-19 महामारी के आलोक में टीकाकरण के साथ हमारे संबंधों का पता लगाने का प्रयास करती है।

प्रदर्शनी का विकास राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) ने विज्ञान संग्रहालय, लंदन के सहयोग से और वेलकम, यूके, आईसीएमआर, भारत, एनआईवी, पुणे, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, सीएसआईआर, एम्स, एनआईबीएमजी, कल्याणी के सहयोग से किया है।

भारत के राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) के महानिदेशक श्री अरिजीत दत्ता चौधरी ने कहा, "प्रदर्शनी 'सुपरबग्स: दी एंड ऑफ एंटीबायोटिक्स' की शानदार सफलता के बाद यह एक और परियोजना है जहां हमने एसएमजी समूह, लंदन के साथ हमारे जीवन में टीकों के महत्व के बारे में जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सहयोग किया है। यह कोरोना महामारी के कारण भारत में काफी प्रासंगिक रहेगा।

इस बार प्रत्येक स्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों की यात्रा के लिए एक मोबाइल विज्ञान प्रदर्शनी (एमएसई) बस सम्मिलित की है। एमएसई बस मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदर्शनी के संदेशों का संचार करेगी।

साथ ही, मुझे उम्मीद है कि यह परियोजना भारत और ब्रिटेन में दो अग्रणी विज्ञान संग्रहालय नेटवर्क के बीच संबंधों को और मजबूत करेगी।"

हेलेन जोन्स, ग्लोबल एंगेजमेंट एंड स्ट्रैटेजी, साइंस म्यूजियम ग्रुप, लंदन के निदेशक ने कहा— "प्रदर्शनी के यूके संस्करण में भारत के बहुत सारे तत्व हैं क्योंकि यह परियोजना "चीन और ब्रिटेन और भारत में भागीदारों के साथ शुरू से ही सह-निर्मित एक सच्चा सहयोग था।

निश्चित रूप से, भारत उस कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया दुनिया के लिए तेजी से और बड़े पैमाने पर टीकों के विकास और उत्पादन की भारी चुनौती के साथ आगे बढ़ रहा है, जो हमारे संस्करण में दृढ़ता से दिखाई देता है। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद के साथ एक बार फिर काम करना सौभाग्य और खुशी की बात है।

हमने आपसे जो कुछ भी सीखा है और इस आकर्षक और मूल्यवान प्रदर्शनी को बनाने में जो आनंद आया है, उसके लिए सभी को

धन्यवाद। नागपुर के रमन विज्ञान केंद्र में प्रदर्शनी के उद्घाटन पर बहुत-बहुत बधाई। "कुछ स्थानीय-विशिष्ट सामग्री वाली नई प्रदर्शनी कोविड-19 महामारी अवधि के दौरान भारत द्वारा किए गए प्रयासों को प्रदर्शित करती है। यह मानव जीवन को बचाने में टीकों के महत्व को बढ़ाने और सार्वजनिक भागीदारी को समझने के लिए कार्यक्रम और कार्यक्रमों, डिजिटल और शिक्षण संसाधनों आदि की एक श्रृंखला के माध्यम से वैश्विक मुद्दों पर भी प्रकाश डालता है" — एनसीएसएम के उप महानिदेशक और श्री एस. कुमार भारत में परियोजना के प्रमुख एवं समन्वयक ने कहा।।

श्री अर्नब चटर्जी, परियोजना समन्वयक, रमन विज्ञान केंद्र और तारामंडल, नागपुर ने कहा— "प्रदर्शनी 5 अगस्त, 2023 से 31 दिसंबर, 2023 तक रमन विज्ञान केंद्र, नागपुर में प्रदर्शित होगी और सुबह 9.30 बजे से जनता के लिए खुली रहेगी। रोजाना शाम 6.00 बजे तक हमने जनता को शिक्षित करने और संलग्न करने के लिए इस अवधि के दौरान विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों और इंटरैक्टिव गतिविधियों की योजना बनाई है और मैं नागपुर और विदर्भ के लोगों को प्रदर्शनी देखने और इन गतिविधियों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं। मुझे उम्मीद है कि प्रदर्शनी निश्चित रूप से एल को बचाने में टीकों के महत्व के बारे में उनकी समझ को बढ़ाएगी। "बाद में, प्रदर्शनी नेहरू विज्ञान केंद्र, मुंबई (10 फरवरी, 2024—जुलाई 28, 2024), विश्वेश्वरैया औद्योगिक और प्रौद्योगिकी संग्रहालय, बेंगलुरु (7 सितंबर, 2024—फरवरी 28, 2025) और साइंस सिटी, कोलकाता में (अप्रैल 12, 2025—सितंबर 30, 2025) प्रदर्शित की जाएगी।

सीएसआईआर-सीरी में जिज्ञासा मिशन के अंतर्गत जलवायु घड़ी असेम्बली एवं डिस्प्ले ईवेन्ट का आयोजन

सीएसआईआर-सीरी में जिज्ञासा मिशन के अंतर्गत दिनांक : 13 सितंबर, 2023 को 'ओरिएंटेशन ऑफ क्लाइमेट क्लॉक : असेम्बली एंड डिस्प्ले ईवेन्ट' का आयोजन किया गया। हाइब्रिड मोड में आयोजित किए गए इस कार्यक्रम के आरंभिक सत्र में नवोदय विद्यालय समिति, जयपुर संभाग के अंतर्गत आने वाले 57 जवाहर नवोदय विद्यालयों के 2500 से अधिक विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने प्रतिभागिता की। जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में 'सोलर मैन आफ इंडिया' के नाम से प्रसिद्ध प्रोफेसर चेतन सोलंकी मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर सोलंकी आभासी (वर्चुअल) माध्यम से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में जवाहर नवोदय विद्यालयों के मेधावी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के अलावा संस्थान के वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी भौतिक रूप से एवं अन्य विद्यार्थी आदि आभासी रूप से सम्मिलित हुए।

एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के संस्थापक प्रोफेसर चेतन सोलंकी ने अपने ऑनलाइन संबोधन में बढ़ते वैश्विक तापमान पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हम लोग ही इस तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं, अतः इसे नियंत्रित करना भी हमारी ही व्यक्तिगत एवं सामूहिक जिम्मेदारी है।



इसके नियंत्रण के लिए हम सभी को अपना यथासंभव योगदान देना ही होगा। उन्होंने इस अवसर पर एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के संबंध में बताते हुए फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी भी दी। उन्होंने फाउंडेशन के प्रयासों से विकसित सोलर वैन के बारे में भी छात्र-छात्राओं को बताया।

सभी विद्यार्थी 'सोलर मैन आफ इंडिया' के विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सीएसआईआर के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने प्रोफेसर चेतन सोलंकी सहित सभी विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों का औपचारिक स्वागत किया। अपने संबोधन में उन्होंने भारतीय संस्कृति की केंद्रीय अवधारणा 'वसुधैव कुटुंबकम्' का उल्लेख

करते हुए कहा कि यह धरती हमारी माँ है और इसकी एवं इसके प्रत्येक जीव-जंतु की देखभाल करना हमारा ही दायित्व है।

इस अवसर पर उन्होंने कार्यक्रम में वास्तविक तथा आभासी (वर्चुअल /ऑनलाइन) रूप से जुड़े विद्यार्थियों को बताया कि हमारा संस्थान 'हरित हाइड्रोजन' पर शोधरत है और इसके अलावा हम इलेक्ट्रॉनिक विधियों से ऊर्जा उत्पादन की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हम संस्थान परिसर में एक ऐसे भवन के विकास की दिशा में भी प्रयासरत हैं जो अपनी सभी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति सौर ऊर्जा से करेगा।

एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के इंजीनियर श्री सचिन कुमार ने भी इस अवसर पर



अपने रोचक व्याख्यान में छात्र-छात्राओं को जलवायु परिवर्तनों के प्रति सचेत करते हुए कहा कि हमें मिल कर इन्हें अपरिवर्तनशील स्थिति में पहुंचने से पूर्व रोकने के प्रयास करने होंगे।

उन्होंने अपनी रोचक शैली में प्रतिभागी विद्यार्थियों को अपने व्याख्यान से जोड़ते हुए उनसे संवाद स्थापित किया और वैश्विक जलवायु परिवर्तन संबंधी परिदृश्य से अवगत कराया।

उन्होंने सभी विद्यार्थियों को जलवायु संरक्षण की शपथ भी दिलाई।

प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों एवं शोधार्थियों ने जलवायु घड़ी की असेम्बली का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया।

प्रशिक्षण के उपरांत छात्र-छात्राओं द्वारा तैयार जलवायु घड़ियों का प्रदर्शन भी किया गया।

प्रतिभागी विद्यार्थियों को संस्थान

की विभिन्न प्रयोगशालाओं एवं विज्ञान संग्रहालय में शोध गतिविधियों की जानकारी भी दी गई।

प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में सक्रिय प्रतिभागिता की।

इससे पूर्व 12 सितंबर, 2023 को विद्यार्थियों को यह प्रशिक्षण देने वाले प्रशिक्षकों को एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के इंजीनियर श्री सचिन कुमार ने क्लाइमेट क्लॉक की असेम्बली का प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री प्रमोद तँवर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पीएमई ने प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों को इस कार्यक्रम के आयोजन की पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए जिज्ञासा मिशन की भी जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि भारत सरकार द्वारा आरंभ किए गए जिज्ञासा मिशन का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों को देश में हो रही

वैज्ञानिक एवं शोध गतिविधियों के बारे में बताना और उन्हें अनुसंधान क्षेत्र को कैरियर के विकल्प के रूप में भी चुनने के लिए प्रेरित करना है।

इस अवसर पर विद्यार्थियों को संस्थान के वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों से चर्चा का अवसर भी दिया गया।

विद्यार्थियों ने संस्थान की विभिन्न शोध गतिविधियों के बारे जानकारी प्राप्त की।

विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों ने विज्ञान संग्रहालय का भी परिदर्शन किया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत की।

अंत में एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के इंजीनियर श्री सचिन कुमार ने संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया एवं उनकी पूरी टीम को आयोजन के दौरान उपलब्ध कराई गई सुविधाओं एवं संपूर्ण प्रबंधन के लिए आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर ने उज्ज्वल राजस्थान प्रदर्शनी में “सर्वश्रेष्ठ सूचनापरक स्टॉल” का पुरस्कार जीता

राजस्थान के उदयपुर में “उज्ज्वल राजस्थान-आत्मनिर्भर भारत की ओर” प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ 27 जुलाई, 2023 को अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ।

यह प्रदर्शनी दिनांक 27-29 जुलाई 2023 के दौरान आयोजित की गई जिसमें सीएसआईआर-सीरी, पिलानी और सीएसआईआर-सीएमसीआरआई, भावनगर ने देश में सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े शोध संगठन ‘सीएसआईआर’ का प्रतिनिधित्व किया।

प्रदर्शनी में सीएसआईआर-सीरी और सीएसआईआर-सीएमसीआरआई ने अपनी प्रौद्योगिकियों एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी दी।

प्रदर्शनी में सीएसआईआर के अलावा भारत सरकार एवं राज्य सरकार के संगठनों /कार्यालयों सहित अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं ने भी अपने उत्पादों/पोस्टरों आदि के माध्यम से प्रतिभागिता की।

प्रदर्शनी में 50 संगठनों/कार्यालयों/संस्थाओं ने प्रतिभागिता की तथा प्रदर्शनी में आने वाले स्कूली विद्यार्थियों, उद्यमियों, महिलाओं सहित अन्य नागरिकों को अपने उत्पादों/गतिविधियों के संबंध जानकारी दी।

तीन-दिवसीय प्रदर्शनी में सीएसआईआर के स्टॉल को जानकारी देने वाले सर्वश्रेष्ठ स्टॉल के रूप में सराहना मिली।

प्रदर्शनी में आने वाले विद्यार्थियों



अतिथियों एवं अन्य आगंतुकों ने सीएसआईआर प्रयोगशालाओं द्वारा जनहित में किए जा रहे शोध कार्यों की प्रशंसा की।

सीरी की ओर से दूध और शहद में मिलावट का पता लगाने के लिए विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया तथा वैज्ञानिक पोस्टरों के माध्यम से सीरी की अन्य प्रौद्योगिकियों/गतिविधियों का भी प्रदर्शन किया गया।

इसके अतिरिक्त प्रदर्शनी में संस्थान में सेमिकंडक्टर क्षेत्र में चलाए जा रहे महत्वाकांक्षी प्रशिक्षण कार्यक्रम “शिल्प (सेमिकंडक्टर हाई इम्पैक्ट लर्निंग प्रोग्राम)” के अलावा विज्ञान गांव की ओर कार्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी गई।

सीएसआईआर-सीएमसीआरआई ने भी

किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों के जनमानस को लाभान्वित करने के लिए विकसित नमक, समुद्री एवं पर्यावरण हितैषी हरित रसायनों से संबंधित प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी।

प्रदर्शनी में सीएसआईआर को “सर्वश्रेष्ठ सूचनापरक स्टॉल” के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मीणा ने देश के विकास में सीएसआईआर के योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि यद्यपि आजादी के अमृत काल में देश चहुँमुखी विकास कर रहा है परंतु देश को प्रत्येक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में प्रत्येक देशवासी का योगदान अनिवार्य है।

समापन सत्र में उदयपुर के लोकसभा



सांसद श्री अर्जुन लाल मीणा मुख्य अतिथि थे।

उन्होंने सीएसआईआर का विजेता ट्रॉफी से सम्मानित किया।

डॉ विजय चटर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी और श्री संदीप

कुमार एम वनिया, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सीएसआईआर की ओर से यह ट्रॉफी प्राप्त की।

किसानों, विद्यार्थियों, स्थानीय लोगों और विशेष रूप से गृहणियों ने इस तीन-दिवसीय तकनीकी-सामाजिक प्रदर्शनी

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

में बड़ी संख्या में स्टॉलों में भ्रमण किया और सीएसआईआर सहित अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त की।